हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली
द्वारा प्रसारित

दर्पण मुग्ध है जल पर

(स्वीडी भाषा से हिंदी में अनुदित)

मारिया वीने की कविताएँ
सतीकुमार के अनुवादों में

मूल्य १५ रुपये / प्रथम संस्करण १९७८ / आवरण इमरोज / स्टार पब्लिकेशन्ज नई दिल्ली/एकमात्र वितरक हिन्दी बुक सेन्टर आसफअली रोड नई दिल्ली ११०० २/ मुद्रक मोहन प्रिन्टर्स के ३ नवीन शाहदरा दिल्ली ११००३२।

Darpan Mugadh Hai Jal Par a Collection of poems by Maria Wine prefaced and translated original from Swedish into Hindi by Sati Kumar

[illegible] કો [illegible]
[illegible] કો
[illegible]

पराजय का अस्त्र

मारिया वीने को निकट से जानना उसकी कविताओ की भूमि पर पैर रखने की तरह हैं क्योंकि वह स्वय और उसकी कविता एक ही व्यक्तित्व की झलक हैं दुनिया के किनारे खडा हुआ और दुनिया की तमाम बौखलाहट का अपने अन्तस म लिए हुए।

अगर उसे दो चीजो ने न उबारा होता तो वह अपने ही अन्धेरो म— जिनका ज़िक्र उसने अपनी आत्मकथा 'दे हैव शोट डाउन ए लायन' मे किया है—कब की अस्त हो चुकी होती—शायद शारीरिक तौर पर भी। स्वीडी साहित्यकार आर्थर लुण्डक्विस्ट—जो नोबेल पुरस्कार समिति के सदस्य हैं व कविता मे अवलम्ब के कारण की वह मौत को ज़िदगी मे अन्धेरे को रौशनी मे और अपने कठिन मौन को कविता म ढाल सकी, लगभग तीस वर्षों की काव्य यात्रा के दौरान दो दजन कविता सग्रहो के प्रकाशन के बाद आज स्वीडन म ही नही योरुप की कई अन्य भाषाओ मे भी उनका नाम सम्मान से लिया जाता है।

करीब एक वर्ष पहले स्टौक्होम मे आर्थर लुण्डक्विस्त के घर, जब मारिया से मेरी पहली भेंट हुई थी तो वे मुझे कुछ विरक्त सी लगी थी, एक शुष्क बुद्धिजीवी जिसके जीवन मे औपचारिक मुस्कानो या बातो के लिए कोई जगह नही थी। इसके बिना एक अपरिचित के सामने शायद वे असुरक्षित महसूस करती। उस दिन वे आर्थर के साथ नेहरूकाल म अपनी भारत यात्राओ की स्मृतिया सुनाती रही। उस दिन के बाद जैसे-जैसे परिचय बढता गया और वह मेरी उपस्थिति मे 'सुरक्षित' महसूस करने लगी ता मैंने पाया कि उससे बात करना इतना कठिन नही था। वह तहेदिल तक 'जैनुएन' थी अपनी विरक्ति मे भी और जीवन के साथ 'आसक्ति' म भी। यही बात उनकी कविता पर लागू होती है। उनकी कविता म तीखी निराशा का स्वर सबसे पहले मन को छूता है सूर्यास्त के बाद दुबारा सूर्यास्त होने की स्थिति जिसमे सूर्योदय का सक्रमण नही। लेकिन यह निराशा एक दार्शनिक की नही, और न ही महज एक औरत की है। वह जीवन और साहित्य मे बेहद सवेदनशील हैं और उनका तमसबोध भावात्मक है और मानव नियति को लेकर है। वह अपना युद्ध अपने अन्दर लडती है पराजय को अपना हथियार बना कर। जिसके हाथ मे पराजय को अस्त्र हो उसे कौन जीत सकता है?

यहा आधुनिक स्वीडी-काव्य की प्रवृत्तियों के विस्तार में नहीं जा रहा हू कविताए स्वय अपना परिप्रेक्ष्य हाती है। यू जो पाठक ज्याद ाजानना चाहते हों उनके लिए मेरे द्वारा सम्पादित स्वीडी-कविताओ की एथालॉजी 'सफेद रातें काले दिन' पहले से सुलना है ही।

आर्सगाटन ३२ ६०७
१७१५६ सोलना (स्वीडन)

• सतीकुमार

पक्ति-सकेत

दर्पण मुग्ध है जल पर

दर्पण से भिक्षा मागता सौंदर्य

१

अब मैं लौट जाऊगी
एक फूल मे
डूबते व्यक्ति के अधिकार के साथ
जो अपने क्षण का अन्त कर देता है
क्षण की अ-रक्षा मे
जब जीवन मौत मे बदलता है

२

जब आदमी अकेला होता है
तो वह दो होना चाहता है
जब वह दो होता है
तो आदमी हमेशा तीन होता है
वह तीसरा आदमी
अकेला होता है

३

खतरा और उम्मीद
एक-दूसरे के बेहद पास हैं
एक-दूसरे का हाथ थामे हुए

कई बार खतरा एक कैंची होता है
जिसकी टागो मे फसी उम्मीद
छटपटाती रहती है

कई बार उम्मीद
एक हरा मैदान होती है
जिस पर उडता हुआ बाज
हमेशा कैंची चलाता रहता है
छाया की

४

खोजती हू गुलाब
पाती हू बरफ
खोजती हू बरफ
पाती हू गुलाव

जब कुछ भी नहीं खोजती हूँ
पा जाती हू दोनो
गुलाव और वरफ

५

औरत ! तुम भयाक्रान्त हो जगल से
तुम्हारी आखें भय की साक्षी हैं
जब तुम अन्धकार मे झाकती हो
तो एक असुरक्षित-पशु का भय
तुम्हारी दृष्टि मे होता है

औरत ! तुम स्वय एक जगल हो
सघन और अद्भुत मैं जानती हू
तुम खुद से भयभीत हो

६

दपण मुग्ध है जल पर
जल
मे
देखता है खुद को
और पाता है कि
वह भी पथराया हुआ जल है

७

मुझे एक सुन्दर शिला दो
लेकिन इतनी सुन्दर नही कि
मैं उसके सौन्दय का बयान न कर सकू

मुझे जीने के लिए मुहब्बत दो
लेकिन इतनी ज्यादा नही कि
मैं उसे लौटा न सकू

मुझे एक खुशी दो
लेकिन इतनी अकस्मात नही
कि मुझे उछलने तक का समय न मिले

अगर यह सभव नही
तो मुझे गम दो इतना बडा
कि मेरा बचना मुश्किल हो जाए

८

औरत नहाने के लिए जब तालाब मे उतरती है
तो उसके दिल म वही क्वारी उम्मीदें होती हैं
जिन उम्मीदो को लिये वह कभी अपने
प्रेमी के बिस्तर पर जाती है

आहिस्ता-आहिस्ता
वह अपनी देह को डूब जाने देती है

उस स्निग्ध नम्र पानी मे
पानी उन्माद मे उसके चारो ओर घिर जाता है
उसके उरोजो से खेलता हुआ
जो उसकी चोट से सख्त और गुलाबी होते चले जाते है
और हाथ फैल जाते है जैसे झील के सितार हो

विचारमग्न बहती है वह आगे कभी पीछे
झील की जल-दिशाओ मे

पानी की सतह पर कुमुदिनी की तरह
झूलता है उसका सिर
और आखो की प्यास मे
उगता चला जाता है एक सपना
जिसे कोई भी प्रेमी
कभी पूरा नही कर सकता

६

जागो वनसरोवर !
खोलो अपनी हिमजडित पलकें
पिघलाने दो सूरज को तुम्हारी कठोरता
व्योम को टपकाने दो अपना नीला खून
तुम्हारे अन्धकार मे
नहाने दो अपनी आखो को सूरज की पीली रोशनी मे
हवा को उठाने दो लहरें
जिन पर कुमुदिनी का
स्वप्निल-सिर झूलेगा

जागो वनसरोवर !
वसन्त आ गया
अपनी नीली आखो को पृथ्वी पर फैलने दो

जागो ओ मेरे छोटे-से वनसरोवर !
खोलो अपनी हिमजडित पलके !

१०

सपनो म डूबे अचानक चलते चलते
हम चौंक उठते हैं ऐसी आरोही-ध्वनियो को सुनकर
जिनसे हमे एक चक्र मे दौडते घोडो की याद आती है
और लगता है जैसे किसी भी क्षण
सामने से दौडते आएगे अनन्त घोडे
और हमे रौद कर गुजर जाएगे

लेकिन तभी
हम स्वय को खडा पाते हैं
एक पुकारते जलपात के सामने
और सोचते रह जाते है कि
वे खूखार घोडे
क्रुद्ध जलपातो मे कब बदल गए ?

११

भला एक छछूंदर और सितारे मे
दोस्ती कैसे हो सकती है ?
ताक मे है सितारे की नुकीली रोशनी
मुझे वेध डालने की

मैं एक काला बुर्का ओढ कर
उसके घने अन्धकार मे जा छुपती हूं

सितारा तलाश मे रहता है
बर्फ का यह बेरहम क्रूर
काच का टुकडा
पहिए पर बरछी सा अंकित

मेरे छाया-परिधान को
वह चीथड़े कर डालना चाहता है
और नग्न कर
सोख लेना चाहता है मुझे
अपनी सालती रोशनी मे

मैं सहम कर और भी गहरे जा बैठती हू
अन्धेरे से घिरी
अपनी छछूदरी-बिल मे

१२

जहा रास्ते खतम होकर नए रास्ते तक नही ले जाते
जहा नदिया बहती हैं लेकिन उनमे बहाव का उल्लास नही
जहा उबकाई आती है शून्य मे समुद्र का दर्पण-नृत्य देखकर
जहा बादलो मे अश्वारोहण सभव नही रहा क्योकि
यान्त्रिक कल्पणाओ के शिकजे मे फसे है हम
जहा मेरा गीत तुम तक नही पहुच पाता
क्योकि हवा रास्ते मे ही रह जाती है

और जहा मेरी आख
व्यथ ढूढती है प्रत्युत्तर
तुम्हारी निर्बिम्ब आख मे
वही मेरी मृत्यु है
तुम मे

१३

एक तानाशाह
ताले के सुराख से बड़ा नही होता
लेकिन उसकी अगल बगल का अन्धेरा होता है
अन्तहीन

अपनी हर धमकी के बाद
हल्का होकर वह हाथ धोने चला जाता है
खाली हवा मे
वे दस हत्यारे—उगलिया उसकी—
हसने लगते हैं चुपचाप

तानाशाहो के पास समय नही होता
सुन्दर औरतो को रिझाने का
लेकिन वे नजर आती है उसके सध्या-भोजो पर
जहा भोजन के नाम पर महज एक प्लेट होती है
निर्जीव घोघो
और कागजी फूलो से भरी हुई

तानाशाह बस जाता है
सुरग मे या प्रतिध्वनियो की मीनार पर
सापो बिच्छुओ और उल्काओ के पडोस मे
क्योकि वह काप उठता है सध्या की सिन्दूरी रोशनी मे
उसके राज्य मे
इकाईयो और सूर्यास्तो के प्रशस्ति-गीत
अवाध्य घोपित कर दिए जाते हैं

अगर कोई तडपती इकाई सिर उठाती भी है तो
से ठूस दिया जाता जग और खून के धब्बो भरी दीवारो मे
जो उसे धीरे धीरे निगल जाती है

एक भीड की भीड को कत्ल होते देखकर
वह अट्टहास कर उठता है
लेकिन जब वह देखता है एक
अकेले आदमी को
इकहरी मौत मरते हुए
तो काप उठता है उसका कलेजा
उड जाता है उसके चेहरे का रग
दम घुटने लगता है उसका
अपनी ही हवा मे दिन-दहाडे

मर सकता है तानाशाह एक घोघे के
कठ मे फस जाने से भी

१४

भागो भागो स्वय से
बाँध लो उन्मत्त घोडो को अपने शरीर से
और बिखरने दो उसे हवाओ मे

भागो भागो अपनी विभोरता से
आग पर रख दो अपनी चीथडा अनुभूतियो को
क्योंकि इससे तुम्हारे अन्दर की आग बुझ सकती है

भागो भागो अपनी वेदना से
चाकू से छील दो अपना रिसता-घाव
और बह जाने दो उसे समुन्दर मे

भागो भागो समय से
बैठ जाओ सुबह की दहलीज पर
प्रदीप्त क्षण को अपनी नजर मे लिए
जब तक रातें और दिन
तुम्हें अछूता छोड कर
आगे नही बह जाते

१५

जगली गुलाबो
और जगली बालको का
पोपण मत करो !

गोधूली के कुहासे मे चुपके से निकल कर
चुधिआती साझ की कैंची
दस्ताना-चढे हाथो मे लिए
और बुलबुल का मस्त गीत सुनते हुए
मत काटो गुलाब को

रात के कुछ और ढलने पर
घेर कर बालकों को
मत बैठाओ उन्हे
अधेरे की उस लम्बी रेल गाडी पर
जो उन्हे लेकर चल देती है
'कहीं नहीं' के स्टेशन की ओर

तब जगली गुलाबो
और जगली बालको का
पोपण ही मत करो !

ताश-क्रीड़ा

१

कई लोग इतने माहिर होते हैं कि
वे आंख झपकते-झपकते
आकाश की ओर उठी अपनी उंगली को
एक दनदनाते पिस्तौल में बदल डालते हैं

२

एक तानाशाह
किसी न किसी दिन
अपने बडे बूटो मे डूब जाता है

३

हम सब
अपने पैरो की अकुलाहट को
एक उडते पख मे
बदल देने की कोशिश में है

४

एक तेजी से घूमते चक्के पर
सवार हैं मेरी आखें
उलटी दिशा में भागती
दो तेज गिलहरियों की तरह

५

कितनी बडी निराशा होती है
यह जानकर कि एक
कमज़ोर इतना कमजोर नही होता
ताकतवर इतना ताकतवर नही होता
जैसा कि सब सोचते है

क्या उपयोग है तब भला
तुम्हारी शक्ति-क्षुधा का
या परकटी बेवसी मे
कही भाग जाने की
इच्छा का ?



६

दर्पण के हाथ से छूट जाने पर
औरतें अक्सर
भयभीत हो जाती हैं

उसके बाद वे
कांच के टुकड़ों को ऐसे बटोरती हैं
जैसे टूट कर बिखरा हुआ
उन्हीं का अपना चेहरा हो

७

दर्पण
एक उजाड कमरे मे
प्रसन्न है
अपने चेहरे पर
धूल की पर्तें जमती देख कर

वह भी छुपना चाहता है कभी कभी
बेशरम आखो
और लिपे-पुते चेहरो से

८

दपण के
जलाशय मे घुसने की कोशिश
बेकार है
क्योंकि उसकी रक्षा के लिए
तुम्हारे जैसा
एक लकड़बग्घे का चेहरा
तैनात है

६

इससे पहले कि तुम
अपनी बात लिखो
वह बदल चुकी होती है

तुम खुद बदल चुके होते हो

इससे पहले कि तुम रौशनी लिखो
अन्धेरा उसे चाट चुका होता है

इसलिए अपनी बात
हमेशा अन्धेरे की आड मे रहने दो।

१०

एक तीर खुशी मे
गाता हुआ
अपने निशाने की ओर दौडता है
निशाने मे धस कर
कापने लगता है असहाय
एक जख्म की
पकड मे
पेचीदी
जसे फस गया हो
खुद ही
अपनी साजिश मे

काली गुड़िया से खेलते हुए

पदचिन्हों का दर्द

कई बार दिल मे आया है कि
अपने ही पदचिन्हो को अचम्भे मे डाल दू
आधे रास्ते से लौट चलू

अब तक पदचिन्हो मे
शायद कोई मजेदार रहस्य जन्म ले चुका हो
फासले ने जरूर
पदचिन्हो को बागी बना दिया होगा

पलट कर
मैं अपना पैर
अपने बीते पदचिन्हो मे डालती हू
उस रहस्य की हरकत पकडने के लिए

मैं देखती हू कि
वे पदचिन्ह
या तो कुछ फैल गए है
या कुछ सिमट गए है

हो सकता है कि
मेरा पीछा करने की कोशिश मे
वे कुछ फैल जाते हो
या पीछे छूट जाने के दुख मे
कुछ सिकुड जाते हो

कई बार दिल मे आया है

किसे कहें ?

किसे कहे
कि फैसला करना होगा ?
उनसे
जो कन्धे झटक कर आगे बढ जाते हैं ?
या जिनके होठो म कील ठुके है ?
या जिसकी गाल पर
सूखे हुए खून का गुलाब है
या सरपट दौडती
कलाई की घडी
इस बेरहम तानाशाह से ?

पीडा से
जो किसी भी आग मे नही पिघलती
या यक्ष्मा की बीज
मक्खी से ?
या अपच—
बटुए से ?
कजूस चुम्बनो से
या दातहीनो के
ठ ठे अट्टहास से ?
किसे कह
कि अब टाला नही जा सकता

उससे जो जानबूझ कर अधे हैं ?
धरती के पपडी जमे होठो से ?
या कागज की तरह उडते चन्द्रबिम्ब से ?

या कुबडी पीठो से
वे नद भार की बात करें ?

कपासी खेतो की वर्फीली फसल से
दूरियो की नीली सभावनाओ से
अनपिए विषो
या बेनाम प्रतिबिम्बो से
हत्यारो और आत्मघातियो के
अन्तर्मनो मे
चोर-रास्तो से

बताइए हम किसे कहे
नीव मे पडती दरार के बारे मे

किसे ?

वृक्ष और कविता

यह एक वृक्ष खडा है
हवा गाती है शब्दहीन कविता
इसकी टहनियो मे

मैं जानती हू
कि पेड की नियति कागज बन
एक कागज शब्द का प्यासा
मैं जानती हू
एक शब्द कागज पर अकित हो
एक शब्द कविता वन जाने के
मैं जानती हू
एक अलिखित कविता अपने प्र
एक कविता अपने कवि की खो

लेकिन मैं यह भी जानती हू
कि कवि उदास होता है
जब कागज बनाने के लिए
पेड को गिराया जाता है

खतरा

सिर्फ आजमायश
और निष्कष देखने के लिए
सफेद बच्चे को छूट दी गई
काली गुडिया से खेलने की
सिफ उनके शिक्षण के लिए
बडो नें समझा कि इस खेल मे
किसी को खतरा नही था

गुडिया से किसे खतरा हो सकता है ?
जैसें चाहे मरोड दो
प्यार से सहलाओ
या नफरत मे ऐंठ कर
घूरो पर फेंक दो

खेल कब खत्म होगा
इसका फैसला भी
सफेद बच्चे पर छोड दिया गया

वक्त पाकर
काली गुडिया से खेलने का शौक
आदत मे बदल जाता है

तब उसे
नकली पिस्तौल दिए जाते हैं
खेलने के लिए
यह समझ कर कि इस खेल मे
किसी को कुछ खतरा नही
नकली हथियारो से खतरा किसे होता है ?

वह पहली गोली
खामोशी के सीने पर दागता है
इसके बाद की गोलिया दागता है वह
अपने मा-बाप और दोस्तो पर

आखिरी कारतूस
सभाल रखता है
बडा होकर
काली गुडिया पर दागने के लिए

'हा-नहीं'

'हां-नहीं'
उसका नाम है

एक गाल चाद सा पीला
दूसरा आग सा लाल है
चपत पडने के बाद

रौंदे हुए कागज की सिलवटें
माथे मे

गुडिया की
शीशयी आख में
कोई भी झांक सकता है

गले मे लटकता
पजयी-लगर
सफर के बाद
काली हाथी-हड्डी का
उसकी कापती उगलियों
सहलाती हुई उसे
जैसे दूध दुहा जाता है
टूटे हुए नाखून
लेकिन रगे हुए
रूखे बालो मे
आग की कौंध

आखो मे उदासी
लेकिन होठ चूमते हुए
क्रीडारत

हरबार
'हा-नहीं' का चेहरा
झाकता है दपण से
हत्‌बुद्धि !

कैसे उसकी जुडवाँ आखें
देख पाएँ
एक ही सपना
जबकि एक आख नीली
और दूसरी भूरी है ?

राजा खीस-हसी

मनआयी हररोज करता है
राजा खीम हसी

छ सवार सात नीदमस्म
वृहदाकार मकडे
एक दूसरे की देहो को खाते हुए
एक दूसरे के मुख से पीते हुए
मदिरा
अभिसार की

चुम्बन काटते हुए
दुलारना उखाडना
फटी-आखें
मौत की खरोच से
फेन उगलते होठ
उफना हुआ कोप
ज-म की चीखें
चीखो मे जन्म

बढती हुई
आबादी
हत्यारो की सहूलियत के लिए

विष पिसते हुए
कपालो मे
बढता हुआ मुनीमो की बही मे
कर्ज जिन्दगी का

पादरी सफेद-पोश
या खून सी लाल पोशाक मे
सजे धजे झूठ
घूमता हुआ
चक्का
कब का खोज रहा है
अपना मध्य भाग

हररोज
मनआयी करता है
राजा खीस हसी

□□□

1